

जहाँ कर्म का भाव्य विद्यमान है वहाँ  
निरर्थक चिन्तन प्रकृत से उत्पन्न करता है जहाँ  
शारीरिक प्रयासों किमती (प्रयासों) प्रकृतों को  
सुखी बनाए रखने से काम है व प्रकृत  
उपलब्ध है।

कार्ड  
उपस्थित अधिकारी  
उपस्थित (सुखी)